लोकविद्या जन आन्दोलन पुस्तकमाला-5

लोकविद्या सत्संग

विद्या आश्रम
सारनाथ, वाराणसी-221007

ज्ञान दर्शन

1. ज्ञान उद्योग नही है।
2. ज्ञान मुनाफा कमाने के लिए नही है।
3. ज्ञान किसी की निजी सम्पत्ति नही है।
4. ज्ञान शोषण का साधन नही है।
5. ज्ञान का शोषण मानवता के प्रति अपराध है।
6. ज्ञान मनुष्य और समाज के पुनर्निर्माण का साधन है।
7. ज्ञान समाजहित की धरोहर है।
8. ज्ञान मनुष्य की जीविका का साधन है।
9. ज्ञान मनुष्य और समाज की शक्ति और मुक्ति का स्रोत है।
10. ज्ञान की सभी धारायें बराबर के सम्मान की हकदार हैं।

ykdfo|k tu vkUnkyu iLrdekyk&5

ykdfo|k lRlx

fo|k vkJe
lkjukFk] okjk.klh

ykdfo|k tu vkUnkyu i|Lrdekyk&5

i|fLrdk % ykdfo|k lRl:x
fl rEcj 2013

lg;kx jkf'k % #- 10-00

i:dk'kd %
लोकविद्या जन आन्दोलन के लिये विद्या आश्रम की ओर से डा.
चित्रा सहस्रबुद्धे, समन्वयक, विद्या आश्रम द्वारा प्रकाशित।
सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007

lEid: %
फोन : 0542–2595120 (कार्यालय)
09452824380 (दिलीप कुमार 'दिली')
ई–मेल : vidyaashram@gmail.com
वेब साइट : vidyaashram.org
ब्लाग : lokavidyajanandolan.blogspot.com

end %
सत्तनाम प्रिंटर्स
एस–1/208 के–1, नई बस्ती
पाण्डेयपुर, वाराणसी–221002

ykdfo|k lRlax

fo"k; lwph

1.	ज्ञान पंचायत बनाओ	4
2.	ज्ञान आन्दोलन की ज़रूरत है	5
3.	लोकविद्या सत्संग	7
4.	लोकविद्या जन आन्दोलन के मुद्दे	17

❐

Kku iapk;r cukvk

लोकविद्या सत्संग जहाँ भी हो वहाँ सबसे पहले एक ज्ञान पंचायत बनाई जानी चाहिये। ज्ञान पंचायत पाँच खम्भों की एक मड़ई है जो ज्ञान का प्रतीक है और ज्ञान–चर्चा का स्थान भी। मड़ई के पाँच खम्भे लोकविद्याधर समाज के प्रमुख पाँच घटकों के प्रतीक हैं– किसान, कारीगर, आदिवासी, छोटे–छोटे दुकानदार और महिलायें ये पाँच घटक हैं। ज्ञान पंचायत लोकविद्याधर समाज की एकता और ज्ञान का जीवंत स्थान है।

गाँव–गाँव में, बस्तियों और मुहल्लों में ये ज्ञान पंचायतें बनाई जानी चाहिये। इन्हें पंचायत इसलिये कहते हैं क्योंकि इन स्थानों पर ज्ञान–ज्ञान के बीच ऊँच–नीच नही होती। सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा दिया जाता है और सभी को ज्ञान की बातें करने का बराबर का हक होता है। यहाँ पर गरीब और अमीर, किसान और प्रोफेसर, कारीगर और इंजीनियर, दुकानदार और कर्मचारी, महिला और पुरुष सब बराबर हैं।

ऐसे स्थानों पर लोकविद्या सत्संग के जरिये आम जनता का ज्ञान आन्दोलन आगे बढ़ाया जाये।

Kku vkUnkyu dh t:jr gS

ज्ञान में ही मनुष्य और समाज के निर्माण और पुनर्निर्माण का आधार होता है। अगर लोगों के मन का और सबके लिये न्याय का समाज बनना है तो उसे आम लोगों की सक्रियता पर ही आधारित होना होगा और इस सक्रियता का आधार उनके अपने ज्ञान (विद्या) में ही हो सकता है। किसानों, कारीगरों, छोटे–छोटे दुकानदारों, मछुआरों, तमाम तरह का मरम्मत, सेवा और निर्माण का काम करने वालों, आदिवासियों और महिलाओं के पास जो विद्या है उसे लोकविद्या कहते हैं और इन सबको लोकविद्याधर समाज।

आज ज्ञान के क्षेत्र में ऊँच–नीच और गैर–बराबरी है जिसके चलते लोकविद्याधर समाज के सामने चार बड़े दुःख मुँह बाये खड़े हैं–

1. उनके ज्ञान (लोकविद्या) को ज्ञान ही नही माना जाता,
2. बाजार में उनके श्रम का बहुत कम मूल्य मिलता है और ज्ञान का मूल्य तो कभी दिया ही नही जाता,

3. राष्ट्रीय संसाधनों जैसे बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा, वित्त आदि का सबसे छोटा हिस्सा इन्हें मिलता है,

4. इन्हें इनके जीवनयापन के कार्यों, संसाधनों और रहने के स्थानों से लगातार विस्थापित किया जाता है।

इन चार दुःखों से मुक्ति जब तक नहीं मिलती तब तक सबके लिये न्याय और खुशहाली का समाज नहीं बनाया जा सकता। दुःखों से मुक्ति का यह मार्ग लोगों के ज्ञान आन्दोलन में ही है।

लोकविद्या के लिये ज्ञान के क्षेत्र में बराबरी का दावा पेश करने का काम ही ज्ञान आन्दोलन है। इसे लोकविद्या जन आन्दोलन कहा गया है। यह आन्दोलन अपने संतों से प्रेरणा लेता है और उनकी सहायता से लोकविद्या सत्संग की वाणी का निर्माण करता है।

इस ज्ञान आन्दोलन का दर्शन ही लोकविद्या सत्संग में होता है।

❐

yksdfo|k lRlax

1- yksdfo|k ds Lokeh cksy
Kku ds vius nkos [kksyAA
rsjk Kku gS vueksy
eq[k xaokj u [kqn dks rksyAA
rsjh fo|k gS cstksM+
yksdfo|k gS vueksy
vius Kku dk nkok BksdAA

2- लोकविद्या जन–जन में है। हर आदमी ज्ञानी है। ज्ञान के बिना मनुष्य नहीं। ज्ञान केवल पढ़े–लिखे के पास है, ऐसा नहीं है। प्रोफेसर साहब के पास ही ज्ञान है और हमारे गाँव के माधो, कमला, सरिता, बबलू या असलम के पास ज्ञान नहीं हैं, ऐसा नहीं है।

पढ़े–लिखे लोगों ने एक बड़ा भरम फैलाया है कि जनता, यानि हम आप जैसे लोग, अज्ञानी हैं– अशिक्षित हैं, इसलिये गरीब हैं, वंचित हैं, बदहाल हैं। इस भरम को जला दो।

Hkje >kMh ds ckj nks euokAA VsdAA

jSu pan fcu] unh uhj fcu]
/kjrh esg fcuk]
tSls iq#"k ukjh fcu gks uk
oSls ik.kh Kku fcukAA

nsg uSu fcu] iaNh ia[k fcu]
/kku] {khj fcuk
tSls r:oj Qy fcu gks uk
oSls ik.kh Kku fcukAA

जो ज्ञान जन–जन में है, जो ज्ञान समाज में है, जो ज्ञान आप में है इसे ही लोकविद्या कहते है। यह लोकविद्या हम अपने मां–बाप–गुरू से, बुजुर्गो से, घर–परिवार से, दोस्त–मित्रों से, साथियों और सहयोगियों से तथा अपने कामों के अंतर्गत प्राप्त करते हैं और अपनी तर्क–बुद्धि व विवेक से इसे निखारते हैं, यही ज्ञान लोकविद्या है।

3- इस लोकविद्या का दर्शन ही लोकविद्या सत्संग में होता है। इसलिये ज्ञान को समय के अनुसार सतत् नया बनाने, अपनी दुनिया को न्यायपूर्ण और सत्य का संगी बनाने की चाहत रखनेवाला लोकविद्या सत्संग में आता है। लोकविद्या सत्संग लोगों के बीच भाईचारा पैदा करता है, दुनिया की अन्यायी प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर पाने का विश्वास पैदा करता है, और मनुष्य के अन्दर की शक्ति को जगाता है। एक बार लोकविद्या सत्संग में आने वाला मनुष्य यही कहता है–

vejiijh y py gk l tukAA VdAA

vejiijh dh vycyh xfy;k
vMcM g pyuk
Bkdj yxh ykdfo|k dh
m?kj x; uuk] m?kj x;
m?kj x; uuk] gk l tukAA

ogE vejij lr clr g
nj'ku g yguk
ykdfo|k lRlax tg cB
ogh i#"k viuk] gk l tukAA
dg ykdfo|k dk Lokeh
m/kkj Kku er yuk] l k/kkAA

लोकविद्या में ही मनुष्य की शक्ति है। लोकविद्या क्या है? यह अपना ज्ञान है। यह वो ज्ञान है जो स्कूल–कालेज में नही मिलता। स्कूल–कालेज का ज्ञान उधार का ज्ञान है। यह उधार का ज्ञान सूद सहित लोगों की बुद्धि और शक्ति को चूस लेता है।

4- किसान, कारीगर, आदिवासी, महिलायें और छोटे–छोटे दुकानदार सब लोकविद्या के स्वामी हैं, इनके पास अपने ज्ञान का भण्डार है, ये उधार के ज्ञान पर नहीं चलते। लोकविद्या का निर्माण करते हैं। लेकिन पढ़ने–लिखने की दुनिया ने इन सबको गँवार और जाहिल करार दिया है। पढ़ने–लिखने की संस्थाओं ने हर तरह का अंधेर फैलाया है और उल्टे लोकविद्याधरों को ही वे गँवार कहते हैं। यह तो बड़ा भारी अंधेर है।

अवध अंधाधुंध अंधियारा॥ टेक॥
शिच्छा के मठ बुड़ा रहे, संसार हमारा।

5- पढ़े–लिखों द्वारा चलाई जा रही शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्थायें लोकविद्याधरों को खूब लूट रही हैं। हर प्रशासनिक कार्यालय में लोकविद्याधर ठगा जा रहा है।

कौन ठगवा नगरिया लुटल हो॥

6- ये शिक्षा के मठ, ये कालेज, ये विश्वविद्यालय, ये साइंस के शोध संस्थान लोकविद्या को ज्ञान का दर्जा नहीं देते। वे इसे महज मेहनत के काम कहते हैं, या फिर हुनर, या व्यावहारिक ज्ञान–कौशल मानते हैं। वास्तव में किसान और कारीगर अपनी तीव्र बुद्धि, गहन निरीक्षण–परीक्षण व तर्क से एक व्यापक संदर्भ में अपने हर काम को करते हैं। उनके पास अपने सिद्धान्तों का ढाँचा होता है। इस लोकविद्या के बूते ही वे अपना और अपने परिवार का पेट तो भरते ही हैं, समाज को जिंदा रखते हैं।

लेकिन ये पढ़े–लिखों की दुनिया इनके ज्ञान को ज्ञान ही नहीं मानती। इसी के चलते लोकविद्या के स्वामी का जगह–जगह अपमान होता है– आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, ज्ञान और धर्म के क्षेत्र, सब जगह। इसलिये लोकविद्याधर को अपनी शक्ति को पहचानना है, यह समझना है कि उसके अपने पास ही एक स्वच्छ समाज के निर्माण की शक्तियाँ और विद्यायें हैं। कस्तूरी मृग की तरह हम बावले बने इधर–उधर क्यों भटकें?

tku y: j: fnokuk vcAA V:dAA

;k ?kV vnj ykdfo|k cu
;kgh e: flj tugkjk
vc tku y: j: nhokukAA

;k ?kV vnj ghjk&ekrh
;kgh e: ij[kugkjk
vc tku y: j: nhokukAA

;k ?kV vnj vugn xjt:
;kgh e: mBy Kku Q|gkjk
vc tku y: j: nhokukAA

dg: lc Kkuh] l|uk: Hkkb: lk/kk:
ykdfo|k e: xkfcUn gekjkAA

7- हमारी ताकत तो हमारे अंदर ही लोकविद्या के रूप में बसी हुई है। हमें अपनी मज़बूती के लिये विश्वविद्यालय का, बाजार या तकनीकी चमत्कार का या दबंगई का सहारा लेने की ज़रूरत नहीं है। परदे को हटाना भर है, हमें हमारी शक्ति के दर्शन हो जायेंगे।

?k?kV d iV [kky j
rkg iho feyxAA VdAA

?kV&?kV e ogh lkb clr gA
dVd cpu er cky j AA

lUu egy e fn;uk ckfjy
vklu l er Mky j AA

tkx txr l jx egy e
fi; ik; vueky j AA

dg dchj vkun Hk;k g
ckt r vugn <ky j AA

8- हमारा पढ़े–लिखों से कोई बैर नहीं, लेकिन उनकी दुनिया, उनके मूल्य हमसे बैर ठाने हुये हैं। हमसे ही नही बल्कि इस धरती से, आकाश से, जंगल से, पवन और पानी से, सबसे। जिन पाँच तत्वों से यह सृष्टि बनी, वे पाँचों तत्व स्कूल–कालेज की विद्या के प्रचार–प्रसार के चलते ही प्रदूषित हो रहे हैं, नष्ट हो रहे हैं। स्कूल–कालेज की विद्या के बल पर ही कल–कारखाने, यातायात के साधन, बिजली और कम्प्यूटर–मोबाईल की बढ़ती होती है– बड़े शहर बनते हैं और गरीबी, विस्थापन, गैर–बराबरी, अत्याचार और शोषण के पैमाने बढ़ते हैं। इस विश्वविद्यालयी विद्या के राज में केवल लोकविद्याधर ही उत्पीड़न के शिकार होते हैं– उन्हीं को विस्थापित होना पड़ता है, वे ही गरीब होते हैं। पढ़े–लिखे हमसे बैर रखते हैं। हम उन्हें समझाना चाहते हैं कि लोकविद्या से ही दुनिया खुशहाल होगी। लेकिन वे हर बात को उलझाने में लगे रहते हैं–

ejk rjk euok dl gkb ,d jAA VdAA

e dgrk vk[ku dh n[kh
r dgrk dkxt dh y[kh
e dgrk lj>kougkjh
r jk[;k mj>kb jAA

e dgrk tkxr jfg;k
r jgrk g lkb j
e dgrk fuekgh jfg;k
r tkrk g ekb j AA

9- ये पढ़े–लिखे लोग पोथे पे पोथा लिखते हैं, यूरोप और अमेरिका से उधार पैसा और विद्या लाते हैं, गंभीर चेहरे बना उपदेश और वकालत के भाषण करते हैं और ज्ञान की जगह कचरा पैदा करते हैं जिसकी वजह से हमारी किसानी चौपट हो गई, बुनकर बेहाल हैं, मल्लाह नदी–मां से बिछुड़े हैं, आदिवासी जंगल से खदेड़े जा रहे हैं, दुकानदार उजड़ गये हैं और स्त्रियों का सब कुछ छिन गया है। इन लोगों की बदहाली पर ये केवल घड़ियाली आँसू बहाते हैं, उपाय ढूँढने का नाटक करते हैं, ज्यूँ–ज्यूँ दवा करते हैं मर्ज बढ़ता ही जाता है। इनके बनाये कचरे में हमारा लोकविद्या का हीरा खो गया है–

ekjk ghjk gjkbxk dpj eAA VdAA

dkb ijc dkb if'pe n[k
dkb ikuh dkb iFkj e
ikp iphl rhu d Hkhrj
ykx jg cg fQdj e AA

lqj] uj] eqfu] ;fr] ihj] vkSfy;k
mj> jgs cgs u[kjs esaAA
dgs dchj ij[k ftu ik;k
ck/k fy;k gS vpjs esaAA

नेता, अमीर और पढ़े–लिखे लोगों के बहकावे में आकर लोकविद्याधर समाज भी अपनी विद्या पर भरोसा करना छोड़ दे रहा है। लेकिन हे लोकविद्या के स्वामी, अपने अँचरे में लोकविद्या का हीरा बाँध ले क्योंकि तू ही इसे परख पायेगा। जाग, हे लोकविद्या के स्वामी, जाग। अपने ज्ञान को पहचान, अपने ज्ञान में विश्वास जगा, अपने ज्ञान का दावा ठोक।

ykdfo|k ds Lokeh cksy
Kku ds vius nkok Bksd

10- जागो लोकविद्या के स्वामी, जागो! यह दुनिया तो हाट लुटेरा है। इसमें ठग चारों दिशाओं में बैठे हैं। शिक्षा में, चिकित्सा में, मंडी और राजनीति में इसी ठगी–विद्या का बोलबाला है। अखबार और टेलीविजन इसी ठगी–विद्या के गुन गाते हैं।

tkxq&tkxq tx tkyh euqok
;g rks esyk gkV dkAA VsdAA

vUu fcds] ty fcds] cht Hkh fcdk;
<ksj fcds] tehu fcds] tks: Hkh fcdk;
/kje fcds] dje fcds] Kku Hkh fcdk;
NkM+ Hkje] tkx tjk] ;g gkV gS yqVsjkAA

fy[kk&i<h dh Hkje tky ;s
bl tstky esa rq D;ksa mj>s
rw Kkuh] ykdfo|k ds Lokeh
D;ksa vVds] rw HkVds] ;g gkV gS yqVsjkAA

11- लोकविद्याधर और लोकविद्या दोनों को लूट कर अमीर वर्ग अपना पैसा और हैसियत बढ़ा रहे हैं। स्कूल–कालेज इस लूट को जायज बना रहे हैं। किसान, कारीगर, आदिवासी, स्त्रियों और दुकानदार के पास ज्ञान की गठरी है। इस गठरी में ज्ञान का भण्डार है। लेकिन चोरवा चुराने बैठे हैं। विश्वविद्यालय अपने ज्ञान का गोदाम भरने के लिये और कम्पनियाँ और निजी उद्यम अपना मुनाफा बढ़ाने के लिये लोकविद्या की बड़े पैमाने पर चोरी कर रहे हैं। लोकविद्या और लोकविद्याधरों को मूर्ख और जाहिल कह–कह कर वे अपनी झोली लोकविद्या से भर रहे हैं।

rsjh xBjh esa ykxk pksj eqlkfQj tkx tjk AA VsdAA

12- हमारी चिंता है कि इस लूट और पाखण्ड को खत्म कर खुशहाली और भाईचारे की नई दुनिया कैसे बनायें? अपने जनपद में, अपने प्रदेश में, अपने देश और इस दुनिया में लोकविद्याधरों की संख्या सबसे ज्यादा है और इनके पास ज्ञान का बहुत बड़ा भण्डार है। लोकविद्या ऐसा ज्ञान है जो सृष्टि के साथ लय में जीने का रास्ता बनाता है, मनुष्य समाज में भाईचारे का ताना–बाना बनाता है। कम्पनियों और संस्थाओं की इस महाठगी से मोर्चा ले सकता है।

आओ, लोकविद्या से एक न्यायपूर्ण समाज बनायें, नया निर्माण करें। आओ, लोकविद्या की खेती करनी होगी। कैसे?

vc dksbZ [ksfr;k eu ykoS AA VsdAA

Kku dqnkj ys cht j xkMs
iszse dk cht cksokos
ykdfo|k ls u; dj Qsjs
<syk jgu u ikoSAA

eulk [kjiuh [kr fujkoS
nc cpu ugh ikoS
dkl iphl tM+&Kku dk cFkvk
tM+ l: [kkn cgkoSAA

myVh&iyVh d: [kr dk tkrs
ij fdlku dgkoS
dg: dchj lqu Hkkb: lk/kk
rc ok [k'kgkyh ?kj ykoSAA

जैसे मनुष्य और ये दुनिया पाँच तत्व की बनी है– जल, जंगल, पवन, अग्नि और आकाश, उसी तरह यह समाज पाँच बुनियादी विद्याधरों से बना है– किसान, कारीगर, आदिवासी, छोटा दुकानदार और महिलायें। ये पाँच विद्याधर–समाज अन्य कई घटकों को जोड़कर किसी भी समाज को पूर्ण समाज का रूप देते हैं। यही नहीं, ये विद्याधर दुनिया के पाँच तत्वों व घटकों की शुद्धता को बनाये रखकर समाज का जीवन चलाते हैं। उनकी यह विद्या लोकविद्या है। आज इन लोकविद्याधर समाजों की एकता में ही दुनिया की खुशहाली का रास्ता बनता है। इस एकता का रास्ता लोकविद्या दर्शन को समझने से दिखाई देता है।

13- लोकविद्या दर्शन क्या कहता है? लोकविद्या दर्शन कहता है कि लोकविद्या का दावा पेश करो। यानि लोकविद्या और विश्वविद्यालय विद्या में भेद खत्म करो, ऊँच–नीच खत्म करो। कृषि प्रोफेसर और किसान की आय एक समान हो, टेक्सटाइल इंजीनियर और बुनकर की आय एक समान हो, मल्लाह और जल–वैज्ञानिक–विशेषज्ञ की आय समान हो,– यही नही, मुख्य बात यह है कि ज्ञान के क्षेत्र में अगर ऊँच–नीच सच में खत्म करनी हो और दुनिया के पाँच तत्वों में संतुलन लाना हो, तो लोकविद्या के बल पर जी रहे हर परिवार में एक व्यक्ति की पक्की आय बनाओ जो

सरकारी कर्मचारी के बराबर हो। यह लोकविद्या की ज्ञान–जड़ी गैर–बराबरी के बढ़ते बुखार को तुरंत रोक लेगी।

ge ikbl js vtc tMh
ykdfo|k dh vtc tMhAA VsdAA

Kku&tMh ekgh l;kjh yxr gS
ver jlu HkjhAA

tu&tu jk[ks bls viuk ?kjoka
rkes xqlr /kjhAA

ikpka ukx iph lka ukfxu
lq?kr rqjar ejhAA

dgS Kkuh tu bgS tMh
vc ys ifjokj rjhAA

लोकविद्या सत्संग यह बताता है कि लोकविद्या की जड़ी को सहेजो, निखारों और इसे आपस में बांटों। इसी के बल पर खुशहाली आयेगी और समाज की बीमारियाँ दूर होंगी। शर्त यह है कि लोकविद्याधरों के बीच एकता बने और लोकविद्या के बल पर काम की पक्की आय बने जो सरकारी कर्मचारी के बराबर हो।

आओ, पाँच खम्भों की ज्ञान पंचायत बनायें और लोकविद्या सत्संग से अलख जगायें। गाँव–गाँव, बस्ती–बस्ती, मुहल्लों और कस्बों में, बाजारों और जंगलों में, पहाड़ों और नदी–किनारों पर ज्ञान आन्दोलन की आवाज को बुलंद करें।

❒

लोकविद्या जन आन्दोलन के मुद्दे

लोकविद्या जन आन्दोलन एक ज्ञान आन्दोलन है, जो ज्ञान के क्षेत्र में ऊँच–नीच को खत्म कर एक न्यायपूर्ण और खुशहाल समाज बनाने का आन्दोलन है। यह लोकविद्या के लिये विश्वविद्यालय और कम्प्यूटर की विद्या के बराबर का मान और दाम तथा भाईचारे के रिश्ते को प्राप्त करने का आन्दोलन है। इसके प्रमुख मुद्दे निम्नलिखित हैं–

1. **लोकविद्या जीवनयापन अधिकार कानून बने।**
2. **हर घर में कम से कम एक वयस्क को पक्की आय हो– लोकविद्या के आधार पर पक्की नौकरी और सरकारी कर्मचारी के बराबर का वेतन मिले।**
3. **राष्ट्रीय संसाधनों जैसे बिजली, शिक्षा, वित्त आदि का बराबर का बँटवारा हो।**
4. **स्थानीय बाजार– छोटी दुकानदारी को संरक्षण दिया जाय।**
5. **किसानों की उपज को जायज दाम मिले।**
6. **खाद्य और वस्त्र के क्षेत्र स्त्रियों के लिये आरक्षित हों।**
7. **विस्थापन बंद हो।**
8. **प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय समाजों का नियंत्रण हो।**
9. **लोकविद्या को ज्ञान की दुनिया में बराबरी का स्थान हो।**
10. **विश्वविद्यालय की दीवारें गिरनी चाहिये।**
11. **हर गाँव में मीडिया स्कूल हो।**
12. **लोकविद्याधर समाज की एकता में ही परिवर्तन के सूत्र हैं।**

घाट-घाट पर विविध ज्ञानधर,
बीच यह अलख जगाना है ।
कौन है ज्ञानी, ज्ञान कहाँ-कहाँ,
फैसला यह करवाना है ।।

लोकविद्या के स्वामी बोल
अपने ज्ञान का दावा ठोक ।